जाओ विषमय बीस, वर्ष आता नूतन इक्कीस

बुझे दीप अनगिनत सिसकियां, रोदन बहु निःश्वास ।
कटु जीवन संघर्ष, भीति का विषमय सा उच्छ्वास ।
आशंका वेदना वित्तक्षय का अनुदिन विस्तार ।
गत संवत्सर की यह पूंजी, गया मनुजमन हार ।। 1 ।।

नर को नर प्रति और अधिक हो चला गहन संदेह ।
मात्र ऋणात्मक अर्थों में यह, जगत बना है गेह ।
अब भी देख रहे निज उन्नति, मनुज शवों पर क्रूर ।
निज अवसान अज्ञ देखो हैं, सक्रिय कल्पित शूर ।। 2 ।।

निज क्षति भी स्वीकार्य अन्य की दुःसह हो यदि हानि ।
पर हित हनन अकारण में भी नहीं हो रही ग्लानि ।
मानवता को तुच्छ समझते अब जैवायुधवान ।
पराभूत सुविवेक, विजेता नर्तनरत बलमान ।। 3 ।।

सूक्ष्म अदृश्य जीव भी करता मानव को निरुपाय ।
क्या कर सके निवारित, संसाधन, मति, शक्ति अपाय ।
व्यग्र खोजती मनुज मनीषा, जब तक नाश उपाय ।
बैठ सकेगा कहां शांति से, भूतल जन समुदाय ।। 4 ।।

केवल भौतिक नहीं, प्रदूषण, मन दूषण भी ज्ञेय ।
मति दूषण आपदा बड़ी यह होना है संज्ञेय ।
जो आस्थाविचलनकारी हो, ज्ञान गरल सम हेय ।
पर कृत गीत, भरत भू सुत को कब तक होंगे गेय ।। 5 ।।

बौने हृदयों से न शक्य है जग की भावी भूति ।
जिनको काम्य साध्य दोनों ही इन्द्रिय सुख अनुभूति ।
नर को उलझाकर रखता नित मात्र बाह्य विस्तार ।
शम दायी होता है केवल आभ्यंतरिक प्रसार ।। 6 ।।

गह्र्य ध्वंस से बहुत उच्चतर, पावन है निर्माण ।
मारण सरल, कठिन है वारण, दुष्कर धारण त्राण ।
दर्प विवर्धनशील, संकुचन पाता रहा विवेक ।
तो क्षितिनंदनवन विनशेगा पा आघात अनेक ।। 7 ।।

बन जाए नैराश्य निमज्जन बस अतीत की बात ।
बीते यह दु:स्वप्न खचित सी आयतयामा रात ।
सीखें हम, तुलनीय कनक से नहीं देह या प्राण ।
मोल जानता वारि बिंदु का बस प्राणी म्रियमाण ।। 8 ।।

आओ तुम सहस्त्रकर नर शिशु कर पकड़ो अब तूर्ण ।
स्खलित चरण, कुछ भ्रमित, न गिरकर हारे यह सम्पूर्ण ।
नव संवत्सर आये लेकर नवल ऋद्धि उपहार ।
शोभन भावों का नरमति में हो पावन संचार ।। 9 ।।

तिमिर तिरोहित हो प्राची में आभा का आभास ।
आओ तुम नववर्ष बनो नव आशा नव विश्वास ।
नव श्रद्धायुत पुनः गगनगत हो पटु हृदय मराल ।
विनताानन नरता का फिर हो दीपित उन्नत भाल ।। 10 ।।

दिनांक : 31.12.2020 शिव कुमार मिश्र

स्थान : भोपाल